Shodhshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
Available online at : www.shisrrj.com
OPEN ACCESS
© 2025 SHISRRJ | Volume 8 | Issue 2
ISSN : 2581-6306
doi : https://doi.org/10.32628/SHISRRJ

भारतीय परिवेश में थर्डजेंडरोंकी मनोदशा

(पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा के विशेष संदर्भ में)

डॉ. कुलभूषण शर्मा
सहायक आचार्य, हिंदी विभाग, पंजाब केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा

पुष्पा यादव
शोधार्थी, हिंदी विभाग, पंजाब केंद्रीय विश्वविद्यालय, बठिंडा

Article Info
Accepted : 01 April 2025
Published : 12 April 2025

Publication Issue :
March-April-2025
Volume 8, Issue 2

Page Number : 167-171

शोधसारांश- चित्रा मुद्गल अपने उपन्यास पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा में थर्डजेंडर पात्रों की मनोदशा को एकांगी, पीड़ित या सपाट रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उसे जटिल, बहुआयामी और गतिशील दिखाती हैं। यह मनोदशा अपमान, अकेलेपन, भय, स्वाभिमान, वात्सल्य की लालसा और स्वीकृति की आकांक्षा जैसे विभिन्न तीव्र भावों का मिश्रण है। वह पाठक को इन पात्रों के मन की गहराइयों में झाँकने का अवसर देती हैं, जिससे उनके प्रति गहरी मानवीय सहानुभूति और समझ विकसित होती है। यह चित्रण न केवल साहित्य को समृद्ध करता है, बल्कि सामाजिक चेतना को भी झकझोरता है।

मुख्य शब्द- थर्डजेंडर, भय, स्वाभिमान, वात्सल्य, सामाजिक चेतना, मानवीय सहानुभूति।

लिंग त्रुटि क्या दोष मां मेरा, काहे फिर तू रूठी
फेक दिया दलदल में लाकर ममता तेरी झूठी
मेरे हक, खुशियां सब तेरे सपने मांग रहा हूं कबसे
छीन लिया इंसा का दर्जा, दुआ मांगते मुझसे।"[1]

साहित्य संवेदनाओं का महासागर है, जिसमें लगभग संसार के समस्त मानव जाति के सुख-दु:ख समाहित हैं। आमतौर पर मानव जाति को दो रूपों में देखा गया है – स्त्री और पुरूष परन्तु मानव जीवन का तीसरा रूप भी है जिसे समाज में किन्नर, हिजड़ा, छक्का एवं संवैधानिक रूप से ट्रांसजेंडर कहा गया है इन्हें तथाकथित आधुनिक समाज आज भीपूर्णता में स्वीकार करने में असमर्थ है। मनुष्य का तीसरा रूप समाज की ऐसी भयावह सच्चाई है जिसे हमारे ग्रन्थों में श्रेष्ठ स्थान प्राप्त है, किन्तु आम जनजीवन में इनकी स्थिति न ही सम्मानजनक है, न ही संतोषजनक। संवैधानिक रूप से अस्पष्ट अधिकार तो मिले, किन्तु घर-परिवार तथा समाज में आज भी कोई सम्मान नहीं मिल पा रहा है।

Copyright © 2025 The Author(s): This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution **4.0 International License (CC BY-NC 4.0)**

भारतवर्ष का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ 'महाभारत' को माना जाता है, जिसमें सर्वप्रथम स्त्री और पुरुष से भिन्न एक अलग लिंग 'किन्नर' का उल्लेख मिलता है। इस महाकाव्य में 'शिखण्डी' नामक एक पात्र था, जो किन्नर था। महाभारत के पूर्व किन्नर जीवन पर कुछ भी लिखा हुआ प्रकाश में नहींहै। तत्पश्चात् अर्थशास्त्र के महान विद्वान 'कौटिल्य' के 'अर्थशास्त्र' में किन्नर जीवन का उल्लेख मिलता है। ऐतिहासिक साक्ष्य की बात की जाए तो शासकों के हरम में रानियों के देख–भाल के लिये किन्नरों की नियुक्ति की जाती थी।

हिंदी साहित्य में 'किन्नर' शब्द 'कि' और 'न' वर्णों के योग से बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ मानव जाति के एक ऐसे वर्ग से लिया जाता है जो न ही पूर्ण पुरुष है न ही पूर्णस्त्री। पौराणिक ग्रन्थों में 'किन्नर' को अलग– अलग रूपों में देखा गया है, जैसे–'समाज में गाने–बजाने का व्यवसाय करने वाले' तो कहीं 'स्वर्ग अथवा देवलोक में जो गायक, उपदेवता जिसका मुख घोड़े के समान' होता है उसे किन्नर कहते हैं।

संस्कृत साहित्य में जहां तीन लिंग की मान्यता है, वहीं हिंदी साहित्य में दो ही लिंग–पुल्लिंग और स्त्रीलिंग हैं। हमारे समाज में भी दो लिंग स्त्री और पुरुष को वरीयता दी जाती है। इसी समाज में एक तीसरा लिंग यानी कि ट्रांसजेडर जिसे उभयलिंगी भी कहा जाता है आज भी समाज में हासिए पर है। यह समुदाय समाज के बीच होते हुए भी अस्तित्वहीन है तथा समाज में इनके प्रति घृणा की भावना फैलायी गयी, जिससे लोगों की दृष्टि और व्यवहार इनके साथ अच्छा नहीं रहा।

चित्रा मुद्गल के कथा साहित्य में थर्ड जेंडर की मनोदशा को दर्शाना, उनके पात्रों के आंतरिक संसार को अत्यधिक सुस्पष्ट करना है। मनोदशा शब्द मनोविश्लेषण से थोड़ा अलग है। मनोविश्लेषण एक दृष्टिकोण है जो किसी व्यक्ति के मन की अचेतन प्रक्रियाओं को समझने पर केंद्रित होता है। यह व्यक्ति के व्यक्तित्त्व, व्यवहार और मानसिक विकारों के मूल कारणों को जानने का प्रयास करता है, जबकि मनोदशा किसी क्षण विशेष या किसी परिस्थिति विशेष में पात्र की भावनात्मक और मानसिक स्थिति को दर्शाता है ।

चित्रा मुद्गल का साहित्य विशेष कर उनका बहुचर्चित उपन्यास 'पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा' में थर्ड जेंडर के पात्रों की आंतरिक मनोदशाओं का एक संवेदनशील और बहुआयामी चित्रण प्रस्तुत करता है। यह मनोदशाएं केवल सतही भावनाएं नहीं हैं, अपितु उनके जीवन के कटु सत्य, सामाजिक व्यवहार और व्यक्तिगत अंतर्द्वंद्वों की गहरी प्रतिक्रियाएं हैं । इस उपन्यास के माध्यम से किन्नर समुदाय की मनोदशाओं को निम्न बिन्दुओं के आधार पर समझा जा सकता है

1. **अपमान और तिरस्कार से उपजी हीनता तथा आत्म -ग्लानि की मनोदशा-** अपमान और तिरस्कार थर्ड जेंडरों की सबसे गहन और मर्मभेदी मनोदशा है, जिसकी जड़ें उनके दिमाग में बचपन से बो दी जाती हैं। जैसे – जैसे बड़े होते जाते हैंये जड़ें इतनी गहरी और मजबूत हो जाती हैं कि ये अपने आपको हर कदम पर अपमानित और तिरकृत महसूसकरते हैं। समाज और परिवार से मिली उपेक्षा, ताने और तिरस्कार उनके भीतर गहरी हीन–भावना भर देते हैं।

'पोस्ट बॉक्स नं.203 नाला सोपारा' में विनोद उर्फ (बिन्नी) जब अपनी शारीरिक संरचना में भिन्नता महसूस करता है और समाज उसे 'छक्का' जैसे अपमानजनक संबोधनों से नवाज़ता है, तो उसके भीतर तीव्र शर्म, गहरा भय और एक असहनीय आत्म–घृणा की भावना जन्म लेती है। यह मनोदशा उसे 'असामान्य' या 'दोषपूर्ण' होने का बोध कराती है, मानो वह कोई दूसरे ग्रह का जीव हो। विनोद इसी हीन–भावना के कारण कहता है "जननांग विकलांगता बहुत बड़ा दोष है, लेकिन इतना बड़ा भी नहीं कि तुम मान लो कि धड़ मात्र वही निचला हिस्सा भर हो। मस्तिष्क नहीं हो,दिल नहीं हो, धड़कन नहीं हो, आंख नहीं हो।तुम्हारे हाथ पैर नहीं हैं।हैं, हैं, हैं सब वैसा ही है, जैसे औरों के हैं। यौन सुख लेने देने से वंचित हो तुम, वात्सल्य सुख से नहीं। सोचो।"[2] विनोद अपने स्कूल में मेधावी छात्र है किन्तु किन्नर समुदाय की सरदार चम्पाबाई उसे 14 की उम्र में अपने समुदाय का हक जताते हुए लेकर चली जाती है। जिससे घर, सामाजिक, सांस्कृतिक और परिवेशगत

बेदखली से उसके भीतर कुंठा का भाव उपजने लगता है –"जिस जिन्दगी का हिस्सा अचानक मुझे बना दिया गया था, वह इतना आकस्मिक और अविश्वसनीय था कि मेरा किशोरमन उसे किसी भी रूप में पचा पाने में असमर्थ था। मनुष्य के दो ही रूप अब तक देखे थे मैंने। इस तीसरे रूप से मैं परिचित तो था लेकिन उसे मैं पहले रूप का ही एक अलग हिस्सा मानता था।"[3] उसके पिता सामाजिक दबाव और समाज में बदनामी न हो, इस कारण विनोद के मरने की झूठी खबर फैला देते हैं। जब यह बात विनोद को अपने दोस्त ईशान से फोन पर पता चलती है कि स्कूल में उसके मृत्यु की खबर दी गयी है, तब वह अपनों के द्वारा किए गए इस तिरस्कार को बर्दास्त नहीं कर पाता और सोचने के लिए मजबूर हो जाता है –"विधि की विडम्बना के नाम पर झेलने का बूता नहीं बचा। कब तक लड़े कोई अपने से, अपनों से।

पप्पा की इच्छा पूरी ही न कर दी जाए?

किस्सा खत्म!

कहां मरूं? मरूं तो कैसे मरूं?"[4] पिता द्वारा किया गया यह अपमान बोध इतना गहरा होता है कि उसे अपने ही अस्तित्व पर ग्लानि होने लगती है।

2. **बहिष्कार से उपजा अकेलापन और परायापन-** परिवार और समाज की मुख्य धारा से निर्ममता पूर्वक काट दिए जाने के कारण किन्नरों के भीतर अथाह अकेले पन और परायेपन की भावना घर कर जाती है। उन्हें लगता है कि वे इस विशाल संसार में नितांत अकेले हैं, जिनका कोई सच्चा अपना नहीं। बिन्नी का अपनी माँ से जबरन बिछड़ना उसके हृदय में एक ऐसा घाव कर देता है, जो कभी भरता नहीं। वह अक्सर अतीत की ममतामयी स्मृतियों में खो जाता है, जहाँ उसे माँ का निष्कपट स्नेह प्राप्त था। यह अलगाव उसके मन में एक निरंतर सूनापन, रिक्तता और बिछोह की स्थायी उदासी बनाए रखता है। किन्नर समुदाय में सम्मिलित होने के बाद भीबिन्नी के भीतर एक 'घर' और 'अपनेपन' की तलाश जारी रहती है, क्योंकि समुदाय का जीवन भी अपनी आंतरिक जटिलताओं, प्रतिस्पर्धा और कठोर सच्चाइयों से भरा है। इस समुदायमें रहकर भी वह भावनात्मक रूप से स्वयं को अकेला महसूस करता है, क्योंकि रक्त संबंध और नैसर्गिक पारिवारिक स्नेह की कमी उसे आजीवन सालती है।
3. **सामाजिक असुरक्षा और भय की मनोदशा-** थर्डजेंडर व्यक्ति हर क्षण एक गहरी असुरक्षा और भयावहता की मनोदशा में जीते हैं। सामाजिक और कानूनी मान्यता के अभाव में वह अक्सर शोषण, हिंसा, भेदभाव और उपेक्षा का शिकार होते हैं। उपन्यास में बिन्नी को न केवल बाहरी समाज से, बल्कि किन्नर गुटों के भीतर भी कई बार शारीरिक और मानसिक प्रताड़ना का सामना करना पड़ता है। बाहरी दुनिया में उन्हें अक्सर मौखिक दुर्व्यवहार, शारीरिक हमले और यौन शोषण का भी सामना करना पड़ता है। यह सब उनके मन में एक निरंतरअचेतन भय पैदा करता है–भय हिंसा का, भय बदनामी का, भय अपनी पहचान छिपने काऔर भय और अधिक हाशिए पर धकेले जाने का। वह कभी भी पूरी तरह सुरक्षित या निश्चिंत महसूस नहीं करताउसका जीवन सदैव एक अदृश्य तलवार की नोक पर टिका रहता है।

विनोद जब अपनी बिरादरी के लिए नए शब्द बदलने के बाद किन्नर शब्द को सुनता है, तो वह हाशिए पर और अधिक धकेले जाने से व्यथित हो जाता है और अपनी बा से कहता है कि –"क्या शब्द बदल देने भर से अवमानना समाप्त हो सकती है? गालियों की गाली हिजड़ा को किन्नर कह देने भर से क्या देह के नासूर छिटक सकते हैं? परिवार के बीच से छिटककर नारकीय जीवन जीने को विवश किए जाने वाले ये 'बीच के लोग' आखिर मनुष्य क्यों नहीं माने जाते"[5]

तथाकथित सभ्य समाज में पूर्ण मनुष्य की कुंठित भावना की असंवेदनाशीलता को चित्रा मुद्गल ने किन्नर पूनम जोशी के साथ विधायक के भतीजे और उसके चार दोस्तों के द्वारा किए गये कुकृत्य को किन्नरों के साथ हो रहे यौन शोषण की गहन पीड़ा को व्यक्त किया है। नृत्य के बाद जब पूनम जोशी कपड़े बदलने के लिए कमरे में जाती है, तो वे लोग कमरे में

जबरदस्ती घुस जाते हैं,पूनम जोशी के विरोध करने पर भी कि उसे कपड़े बदलने हैं कमरे से बाहर जाएं इस पर वह कहते हैं- "कपड़े वे बदल देंगे उसके। बस! वह उनकी एक दिली ख्वाहिश पूरी कर दे। हिजड़ा का गुप्तांग नहीं देखा है उन्होंने...

दो ने झट्के से उसका चूड़ीदार खींच... दो ने टांगों को उठाकर चीरने वाले अन्दाज में फैला दिया...पाशविकता का नृशंस नाच चरम पर पहुंचकर बारी-बारी स्खलित हो गया।"[6] अन्ततः कहा जा सकता है कि किन्नर लोग समाज में मिली उपेक्षा, सम्मनाजनक अवसरों के अभाव और पथभ्रष्ट सरदारों के कारण भी अपराध की दुनिया में संलिप्त देखे जाते हैं- "असामाजिक तत्वों के हाथ की कठपुतली बनने में जितनी भूमिका किन्नरों के संदर्भ में सामाजिक बहिष्कार-तिरस्कार की रही है, उससे कम उनके पथभ्रष्ट निरंकुश सरदारों और गुरुओं की नहीं। ऊपर से विकल्पहीनता की कुंठा ने उन्हें आंधी का तिनका बना दिया।''[7]

4. **प्रतिरोध और स्वाभिमान की मनोदशा-** इन समस्त नकारात्मक मनोदशाओं के बावजूद चित्रा मुद्गल जी यह भी बड़ी सूक्ष्मता से दर्शाती हैं कि थर्ड जेंडर पात्रों में प्रतिरोध, आत्म-सम्मान और स्वाभिमान की एक छिपी हुई, किंतु प्रबल भावना भी पनपती है। यह मनोदशा उन्हें अपनी विषम परिस्थितियों से लड़ने और अपने अस्तित्व को गरिमा देने की शक्ति प्रदान करती है। बिन्नी का यह अटल निर्णय कि वह भीख मांगने या नाच-गाकर अपमानित होने के बजाय, मेहनत से काम करके सम्मानपूर्वक कमाएगा। इसके लिए विनोद को कई बार प्रताड़ित भी किया गया। लेकिन वह अपने लक्ष्य पर अडिग रहता है, यह उसकी प्रबल स्वाभिमानी मनोदशा को दर्शाता है। सारी प्रताड़ना के बावजूद वह उनकी बात स्वीकार नहीं करता और अन्त तक अपनी जिद पर डटा रहता है "उनके लात-घूसे थप्पड और कानों में गर्म तेल सी टपकती किसी भी संबंध को न बख्शने वाली अश्लील गालियों के बावजूद न मैं मटक-मटक कर ताली पीटने को राजी हुआ न सलम-सितारे वाली साड़ियां लपेट कर लिपिस्टिक लगा कानों में बूंदे लटकाने को"[8] बिन्नी उर्फ विनोद समाज की दया या उपहास का पात्र बनकर नहीं जीना चाहता। यह एक मौन, किंतु सशक्त विद्रोह है। इस मनोदशा में एक आंतरिक दृढ़ता होती है, जो उन्हें अपने भीतर की शक्ति को पहचानने और विषम परिस्थितियों में भी अपने मूल्यों पर टिके रहने को प्रेरित करती है। वे अपने 'किन्नर'होने को एक 'श्राप'नहीं, बल्कि एक अलग पहचान के रूप में स्वीकार करने का प्रयास करते हैं, भले ही समाज अभी इसके लिए तैयार न हो।

5. **वात्सल्य और मानवीय संबंधों की लालसा से उपजी करुणा की मनोदशा-** किन्नर पात्रों के भीतर भी सामान्य मनुष्यों की तरह प्रेम, वात्सल्य, स्नेह और मानवीय संबंधों की एक गहरी, अतृप्त लालसा होती है। जब वह इस लालसा की स्वाभाविक पूर्ति नहीं कर पाते, तो उनके भीतर एक करुणामयी उदासी और कभी-कभी दूसरों के प्रति गहरी संवेदना व्याप्त रहती है। उपन्यास का नायक विनोद उर्फ बिन्नी उर्फ बिमली प्रतीक है, उस समाज का जिसे सदियों से मुख्यधारा से दूर ही नहीं बल्कि जानबूझकर और सोची समझी रणनीति के तहत उन्हें शारीरिक और मनोवैज्ञानिक स्तर पर भी चोट पहुँचाई गई। उपन्यास में बिन्नी अपनी माँ को चिठ्ठियों के माध्यम से अपने जीवन के हर पहलू से परिचित कराता है, माँ के बहाने ही हम पाठक भी उस दर्द से गुजरते है, जिस दर्द से बिन्नी और उसकी माँ गुजर रहे हैं- "सामाजिकता की संवेदना से शून्य हो गए है सभी। दरवाजों पर ही काठ के पल्ले नहीं जुड़े हुए हैं। हृदय भी कठकरेज हो गए हैं।"[9] बिन्नी का अपनी माँ के प्रति अथाह प्रेम और उनसे पुनः जुड़ने की अतृप्त चाहत उसकी इस लालसा को गहराई से दर्शाती है। किन्नर अक्सर छोटे बच्चों को देखकर सहज ही स्नेहिल हो जाते हैं, या किसी के सुख-दुख में निस्वार्थ भाव से सम्मिलित होते हैं। यह दिखाता है कि समाज द्वारा अमानवीयमाने जाने के बावजूद, उनके भीतर की मानवीय संवेदना

और परोपकारिता जीवित रहती है। जब वे स्वयं प्रेम और परिवार के सुखों से वंचित होते हैं, तो दूसरों के प्रति उनकी करुणा और बढ़ जाती है, क्योंकि वे दूसरे की पीड़ा को गहराई से महसूस कर पाते हैं।

6. **स्वीकृति और सामान्यीकरण की आकांक्षा की मनोदशा-** किन्नर समुदाय के मन में समाज से सम्मान जनक स्वीकृति और सामान्य जीवन जीने की एक छिपी हुई, किंतु प्रबल आकांक्षा बनी रहती है। यह आकांक्षा उनकी मनोदशा को कभी आशावादी बनाती है, तो कभी यथार्थ की कठोरता से टकराकर निराश करती है। वे चाहते हैं कि समाज उन्हें केवल उनके 'थर्ड जेंडर' के टैग से परे एक पूर्ण मनुष्य के रूप में देखे। जब कोई व्यक्ति उनके प्रति बिना पूर्वाग्रह के सम्मान या मानवीयता दिखाता है, तो वह क्षणिक प्रसन्नता और उम्मीद की मनोदशा का अनुभव करते हैं।यह मनोदशा उनके भीतर एक निरंतर संघर्ष को बनाए रखती है – 'क्या मुझे कभी सामान्यता का अनुभव मिलेगा?'

विनोद तो यहाँ तक कहता है कि यदि समाज में सचमुच समानता लानी है, तो किन्नरों को '0' अदर्स की श्रेणी से बाहर निकाल कर उसी प्रकार देखना चाहिए जैसे बाकी अन्य पिछड़े या हाशिए के वर्गों को। दरअसल विनोद का पूरा संघर्ष यही है कि किन्नरों को भी मनुष्य माना जाए, जैसे बाकी पिछड़े वर्गों को माना जाता है, वह कहता भी है –"जहाँ सरकार ने अनुसूचित जनजाति को रखा है। पिछड़ा वर्ग को रखा है। विकलांग को रखा है और बहुतों को रखा है।ये सब समाज के घोर वंचित वर्ग हैं। लिंग दोषी नहीं। बाकायदा स्त्री–पुरुष हैं।लिंग दोषी सभी लिंग से स्त्री–पुरुष नहीं हैं तो क्या मनुष्य नहीं है? किन्नर बिरादरी का संघर्ष उन्हें मनुष्य माने जाने का संघर्ष है। फिर '0' अदर्स में उन्हें क्यों ढकेला जा रहा है। ... उन्हें अलग से इस रूप में चिह्नित करना घोर अमानवीय कृत्य है। किन्नर चाहे जिस भी वर्ग की संतान हो, चाहे जिस जाति – बिरादरी, समुदाय से संबंधित हो, उसी जाति–वर्ग के अनुसार उन्हें अपना सामान्य जीवन जीने की सुविधा मिलनी चाहिए। अगर वे आरक्षित श्रेणी के माता–पिता की संताने हैं तो वे उस आरक्षित श्रेणी को प्राप्त होने वाली सुविधाओं की हकदार है। समर्थ माता–पिता के समक्ष उनके समुचित भरण–पोषण की दिक्कत है ही नहीं। उन्हें जरूरत है तो जागरूकता की।"[10]

निष्कर्षत: चित्रा मुद्गल अपने उपन्यासपोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारामें थर्ड जेंडर पात्रों की मनोदशा को एकांगी, पीड़ित या सपाट रूप में प्रस्तुत नहीं करतीं, बल्कि उसे जटिल, बहुआयामी और गतिशील दिखाती हैं। यह मनोदशा अपमान, अकेलेपन, भय, स्वाभिमान, वात्सल्य की लालसा और स्वीकृति की आकांक्षा जैसे विभिन्न तीव्र भावों का मिश्रण है। वह पाठक को इन पात्रों के मन की गहराइयों में झाँकने का अवसर देती हैं, जिससे उनके प्रति गहरी मानवीय सहानुभूति और समझ विकसित होती है। यह चित्रण न केवल साहित्य को समृद्ध करता है, बल्कि सामाजिक चेतना को भी झकझोरता है।

सन्दर्भसूची

1.मिलन, विश्नोई, किन्नर विमर्श: समाज और साहित्य, कानपुर विद्या प्रकाशन, 2018 पृष्ठ सं. 292
2.मुद्गल, चित्रा, पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा,नई दिल्ली, सामयिक प्रकाशन, पहला संस्करण 2016, पृष्ठ सं. 50
3.वही,पृष्ठ सं. 24–25
4.वही, पृष्ठ सं. 33
5.वही, पृष्ठ सं. 42
6.वही, पृष्ठ सं. 205
7.वही,पृष्ठ सं . 86
8.वही, पृष्ठ सं.9
9.वही, पृष्ठ सं.49
10.वही, पृष्ठ सं.195–196